

DPN 6243

Title: कुजाग्नि यज्ञ विधि / KUJĀGNI YAJÑAVIDHI

Run. No. 6934

Cat. No. 58

Micro. No.

Subject ~~तान्त्रिक कर्मकाण्ड~~ *tāntrika karmakāṇḍa* Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 29 x 11.3

Folios 17

Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

Fol. 1b: अस्मद् मुक्तकार्यं कुजाग्नि यज्ञा रमे कर्म कर्तुं श्रीकुलमार्तण्डायार्घ्ये नमः ॥

On the margin: श्रीमिश्रित.

10

5

0

संस्तुत्यामसाममनागीयमानिजहा निवेदय ॥ सन ४ यत्रिषमनिदुर्गनिविष्मना ववसर्नदुत्रिनात्य
 गिन ॥ जंजकं कुरुया लायनम ४ वलिगृह २ स्वादा ॥ उं नमा वस्तु माययाधिन नाना यनयनमानमाह
 वस्यदस्येजगता यनयनमानमानुजाया नमयिन कुरुता यनयनमानम ४ सुगायादस्येव नाना
 यनयनमानम ४ ॥ धूय दीयं दत्ता जय सां यर ० ॥ गालव्यव ४ कुमारव्य ४ कुरुताया गिनीग
 लाशरुं ववीयक नागस्य गदाह नगलसु था ॥ गृह कुवलियूजाभा सुस्मिन् यरु विरलयन ४ दत्र
 कुविघ्नसंयानान् ययचु कुमभयिमान् ॥ अरुगन्धदि ॥ जंजं अस्मायरु ॥ वलिक्का नक्रियत ॥
 ॥ ॥ कुरुयादसंस्कारं ॥ जंजकदमायक नम ४ ॥ उं युकामित्वाचि नय दव सविन ४ यत्रित्वा मरु
 मलसायाद्यन्ता ययविकृम्भिकृयदस्येयूषु विष्णुवनमाविग ॥ कुरुनिनीकृती ॥ ॥ उं यद
 वादवदुत नंदवा सयकृमावयं ॥ अग्निमानिस्मादनसाविष्मामु ४ त्व ० दस ॥ जंजिनि २ विष्का

२

कनावाये अं अस्मायरु ॥ उं अयादिष्ठा मया रुवस्मानु उर्थदधामन मरु वलायचकसं ॥ याव ४ नि
 वनमान सनस्यरा जय नंदन उता नीवि वमान ४ नस्मा अत्र गमा मदायस्य कया यजिन्वथ आया
 जनयथावन ४ ॥ जंजकवचाय च ॥ अस्तूकृती ॥ ॥ जंजिनि २ विष्का कनावाये अं अस्मायरु
 ॥ नाउनी ॥ ननमकुं लयाकृती द्या ननी ॥ ॥ उं त्वं मृत्विन्नसत्यमि न प्रत्वा काष्ठा सर्वन ४ सत्वने
 श्विउवकुहस धृकृया मरुसमाना अदव ४ ॥ सीमाऊनी ॥ ॥ जंज ॥ उं मानसा कं नयमान आ
 युष्माना गममाना अल्वयूनी विष ४ माना वीना नूदरा विनावधीदविष्मन ४ सदवित्वा रुवाम
 द ॥ नयनी ॥ ॥ जंजकदमायक नम ४ ॥ यूनती ॥ ॥ जंजकवचाय च ॥ सिद्धनी ॥ ॥ जंजं
 अस्माय अरु ॥ कृती ॥ ॥ जंजकलामय कुरुयायनम ४ ॥ जंजकवचाय च ॥ उं नकोहनवल
 गहनं वैयूवीमिदमरु नंदवल गमूक्तिलामियं भ निष्ठा यममाया निचयानंदमरु नंदवल गमूक्ति

नामिर्यम. समानायमसमाना निवधानमरुनैव नगमूक्तिरामियम. सर्वधर्ममसर्वधर्मिचरत्नम
रुनैव नगमूक्तिरामिर्यम. सजातायमसजाता निवधानात्कृत्वा किनामि॥ निरुती कलुवस्त्रनी॥ नैक हृद
यायस्तनम॥ निरुती पूजन॥ ॥ कलुम (अलखा) यंक्याति॥ नैज सत्वउत्तमन. पा. पू॥ नैज प्रजापु
त्तमन. पा. पू॥ नैज तमाउत्तमन. पा. पू॥ पुन वक्षतागो॥ नैज सूषमूये. पा. पू॥ ॥ ॥ नैज न
म॥ पा. पू॥ लखा विपर्ययत् ॥ ॥ कलानवडी कुनलधवली॥ नैज अं अमृयरुट् ॥ ॥ कलानवकुष ३
थधवली॥ नैक हृदयायस्तनम॥ ॥ पश्चिमैद कि (लाद) कि (ला) नउकव. उकवला मध्य॥ आनया
पश्चिमालखा. दकि (ला) विरुदेवता उकवसामदेवत्यं. पाजापत्यकुमक्षर्म. अश्वत्थसमीगर्क. स्वय
मवदुताग न॥ लखाव दुस्यंकत्वा. गायत्री विन्यस दूध॥ ॥ कलुम (अलखलुम) वीरावयत् ॥ नैज अका
गादिस्वना कवस्थानम॥ नैज ककायादिशुद्धना कवस्थानम॥ नैज असिना कवेववायनम॥ नैज नृपू

नवायनम॥ नैज वलुते नवायनम॥ नैज काधरे नवायनम॥ नैज उन्मरुते नवायनम॥ नैज कपाली
रेववायनम॥ नैज रोषले नवायनम॥ नैज संरावरे नवायनम॥ नैज गदवागिस्थानम॥ ॥ नैज
अकववाय नृत्त॥ उंसदसत्यनिमडुर्ग पियमिनुस्यकाम्यदंसनिमक्षमया सिष० स्वाहा॥ वकधा न्यपुन
यली॥ ॥ नैज लविखायेल्वोषट् ॥ उं वीर्यम्यम॥ वीरि विरुयली॥ ॥ नैज लविखायेल्वोषट् ॥ उं
नंकासिनु॥ घृत् ॥ ॥ उं गीश्वर॥ यूर्यनिधुय॥ गिरवया॥ ॥ वागीश्वरी पूजन॥ नैज कृष्णाय नम॥
उं नैज कृष्णाय नम॥ ॥ नवात्तामकुर्दी॥ नैज वज्रपीठयनम॥ नैज यागपीठयनम॥ उं यूक नम
नसावयंदवस्यसविहृमव॥ स्वर्गयगका॥ ॥ काष्ठयदुर्ग मूलमकुर्दी॥ उं ली मृत्विनसत्यनिन
स्त्रीकाष्टा सर्वकषासत्तनश्चिद्वदुदसुधुय्या मदसुमाना अदृव॥ नैज आत्मनत्वाय या. पूजा॥ नै
ज निवतत्वाय या. पूजा॥ नैज निवतत्वाय या. पूजा॥ उं ॐ क्षानात्तागन० हिमायुमन० समिधोमहि

सिमतवात. क्रादू काय उ नयि दाव. क्रादू शू दत रु उ. क्रादू काय उ स. घा दाव. त्रेर्ज्य दान सनी साय. य ऊ मा
न न ऊ न की. शू नि निर्म कृ नादि. ला सा न रु. सि मत वात. रु ना न व क्राय उ

२ श्री सिद्धि

[illegible]

श्राय रुद्र ॥ उं ॐ ह वा य मि न त्रा जा न व द्वा द वं खा रु द्वा व रु द्वा य जा न न ॥ सि अ न म र्घ या ना द व न ॥
 न्या स ॥ ॥ नै ज व द्वा वे त न्या य न म ॥ नै ज पा य ॥ ॥ ध नू मूर्ता द न य न् ॥ व द्वा म यि श्वा ऊ य न् ॥ उं वे
 ग्ग न ना य वि प्र रु अ न का र्जि ना य धी म हि त न्ना व द्वा ॥ पु वा द या न् ॥ नै ह्म रु द्वा य न यि पू जा न ॥ नै ज हा
 पा य ॥ सै ल अ ॥ नै ज अ क व वा य अ रु ॥ अ व रु द्वा न ॥ ॥ मूल न ऊ य न् ॥ ॥ न ता ग्नि र्ग रु ह्वा ॥ आ स्या
 नि सूर्य का कृ त्वा न ल उ र्य ॥ आ स्या नै र्ग व र्वा त्वा कृ र्ज गी र्ग रु म व वा कृ रु व र्वा द व न क्रि य मा नै वि
 ता व य न् ॥ उं अ न्व ग्नि रू ष सा म ग म रु ध न्व हा नि प थ मा जा न व द्वा ॥ अ नू सूर्य स्य य न् र्वा य व मि न्न नू य
 वा य धि वी आ न गै थ ॥ अ ग्नि क रु ति पु द क्रि ती रु स ॥ अ स्म द मू क का र्थ कृ जा ग्नि ह्वा य न सूर्य र्ग म मु ॥
 मूल म नू य वि ता ॥ उं म यि र्ग द्वा म्वा ग्नि ० ना य स्था वा य सूर्य जा त्वा य सूर्य वी र्वा य मा मू द व ता य स व
 का ० त्वा हा ॥ उं सै व र्ग म उ ल ति ॥ उं स्व स्ति ना म मी न ति ॥ ॥ नै ज न म ॥ उं म म्मा नि त व र्म त्वा कृ द या

5

10

15

20

25

30

मिसामस्तानाजामुनं नानूवस्मां। उवाच त्रीयावतूलां कृत्वा रुजयन्तं तामूढं वा मदनं॥ वालकाः
 मित्रकार्थमिन्धनद्वयं नार्गियुक्ताय॥ नारिदं तसमूहं न॥ नृज नमः॥ उं यष्टादिविष्टा अग्नि
 ४ यष्टिवां यष्टाविष्टा उवाच धीनादि वं गवैश्वानरसदसायुष्टा अग्नि ४ सनादि वासनिषत्या रु
 नकं॥ अर्गियुक्ता॥ नृज दयाय दू नमः॥ लोवाच मर्न॥ ॥ नृज गङ्गाग्नय ००॥ नृज द
 दयाय दू २॥ ककुलीदाय यं न॥ ॥ नृज दयाय दू २ स्वादा॥ वा नृज यमिलं रुद्राणि॥ घृत् न
 ॥ उं गङ्गा अस्या यधीनां गङ्गा विने स्य नीनां गङ्गा विन्यस्य रुद्राणां गङ्गा अयामसि स्वादा॥ नृज
 सं सथा जामाय गङ्गा क्षिनाय स्वादा॥ नृज क्षुनि नृ सं दू स्वादा॥ निलना दू निरुयं॥ ३॥ नृज वं वाः
 मदनं वाययं सवनाय ००॥ घृत् न॥ नृज ल्वनिखायै ल्ववीषट् स्वादा॥ निलन॥ उं स्वस्तियन्ता मन्त्र
 प्रमसूयायि च नृ मसां वयू नृ दधमाग्ना जानता स रुभं मेदि ००॥ ॥ नृज नृ अया नाय सीम

कानयनाय ००॥ घृत् न॥ उं मादिर्मायुदा कर्त्तमसु आगानानवो थिदि। घृत् नस्य कृत्या उयज न
 स्य यथा अ नृ ००॥ ॥ नृज ल्वनिखायै ल्ववीषट् स्वादा॥ निलन यूव वत्सवृत्॥ ॥ नृज यं च वकु
 कल्पना॥ नृज यं यूव वकाय वक्षाधिय नय ००॥ नृज नृ दक्षिण वकाय नृ दक्षिण नय ००॥ नृज वं
 उरु नृ वकाय निवाधिय नय ००॥ नृज लं यश्चि म वकाय ना नाय लधिय नं ००॥ नृज नृ उरु वकाय
 वीक्षनाधिय नय ००॥ नृ नि व कल्पना॥ ॥ नृज उं नृ रुयाय उं वषट् ००॥ ३॥ नृ रु कल्पना॥
 नृज उं नृ रुयाय वषट् स्वादा॥ मूख कल्पना॥ ॥ नृज दू दयाय दू नमः ००॥ नृ क्षुनि नृ सं दू
 ००॥ नृ ल्वनिखायै ल्ववीषट् ००॥ नृ अ क ववाय नृ दू ००॥ नृ उं नृ रुयाय उं वषट् ००॥ नृ अं अं
 य अं रुद्र स्वादा॥ नृ ल्व कल्पना॥ ॥ नृज लं यश्चि म वकाय ००॥ नृज वं उरु नृ वकाय ००॥ नृज
 नृ दक्षिण वकाय ००॥ नृज यं यूव वकाय ००॥ नृज नृ उं वकाय ००॥ नृज अ क ववाय नृ दू

न कर्मल ००॥ उं कायस्वाहा कर्मस्वाहा कर्म कर्मस्वाहा धीमाधीनायस्वाहा मनूयजायनयस्वाहा
 चिरुविज्ञानायस्वाहा दिक्षेस्वाहा दिक्षे मध्येस्वाहा दिक्षे समृद्धीकायस्वाहा सनस्वस्वाहा सनस्व
 स्वेयावकायस्वाहा सनस्वस्वेवृद्धस्वाहा यूष्मस्वाहा यूष्मयमथायस्वाहा यूष्मनत्रधिकायस्वा
 हा त्वष्टस्वाहा त्वष्टु ननुनीययायस्वाहा त्वष्टु यू नू नूयायस्वाहा विष्णुवं ०० विष्णुवनिहया
 य ०० विष्णुवनिधिविहय ००॥ उं ज अं अस्माय रुद्र ॥ वाविम या अ ग र्क मलाय र्क ॥ ॥ उं ज
 अ रुद्रयाय अ नमः ००॥ सुवर्ण कर्कलदाय यं ॥ ॥ कूलन ॥ उं ज अं अस्माय रुद्र ॥ या अ
 सय ४ सूक्त कनो गनी ॥ उं त्वमग्ने अरि त्वमा शु शुक्र त्वमह्य त्वमनस्मनस्य नि त्वने सस्वमा
 षधी सस्व नृत्त नृत्त यनं सुवि ४ स्वाहा ॥ ॥ उं ज अं क वचाय यं ॥ कूलन चतुर्दिक् क्रियं ॥ यूनं
 ॥ उं ज अं अस्माय रुद्र ॥ सिध्द लालाय नाननी ॥ ॥ समिध आसृता तवाश्या नमू लघु नमू ना ४

॥ उं ज अं सिना कुरु न वायस्वाहा ॥ उर्व नू नू ॥ चतु ॥ का ध ॥ उ न्मरु ॥ कया ली ॥ री यता ॥ सीदा नरु न
 वायस्वाहा ॥ नि युत्यं ॥ ॥ नकार रुवा नना न नयुर्वर्क ॥ उं ज अं वस्त्रा लो द मा सने नमः ॥ उं ज अं
 दाय द मा सने नमः ॥ ॥ पश्चिम ॥ उं ज अं विष्णु वं द मा सने नमः ॥ ॥ उरु व ॥ उं ज अं वस्त्रा य द मा स
 ने नमः ॥ अकवा नन चतुर्दिक् धवली समिध द्यय सय वि ४ ॥ उं अग्निमी उय बाहि र्गय कृत्य द व मृ त्युं ॥ दा
 गनी रत्न धा नमी ॥ पूर्व ॥ ॥ उं वस्त्रा लो द वाय वस्त्र द वा व ४ सविता पार्यय रुद्र रुद्र माय कर्म ल आशा
 यक्ष मस्त्रा लो द वाय र्गय रुद्र माय कर्म ल आशा यक्ष मस्त्रा लो द वाय र्गय रुद्र माय कर्म ल आशा
 नवकी र्य जमान सय पशू नया हि ॥ दक्षिण ॥ ॥ उं अग्ने अया हि वी नय रुद्रा लो द वाय ज्ञा तया निहा ना सस्ति
 वदिषि ॥ पश्चिम ॥ ॥ उं गन्ना दवी नरि स्य अ धारु वनु पी नया र्गया नरि स्य वनु न ४ ॥ उरु व ॥ ॥ उं नु
 दिला कपाल पू जनी ॥ उं अग्ने दाय अ हि ना गाय सा मदेवता यगा यगी रुद्र सनमः ॥ उं यरुर्व दाय रान

काञ्चागताय वन्द्य देवताय नमः ॥ उं सामवदाय काञ्चाय नमः ॥ उं देवताय जगती कुन्दस
 नमः ॥ उं अथर्ववदाय वदानस्य नमः ॥ उं देवताय अन्नस्य नमः ॥ ॥ उं नृनाय वक्ररुक्माय नमः ॥
 नावतासनाय सृगाधियतय नमः ॥ उं अन्नयज्ञाङ्गिरुक्माय नमः ॥ उं अन्नयज्ञाङ्गिरुक्माय नमः ॥ उं यमाय दलु
 रुक्माय महिषासनाय पुताधियतय नमः ॥ उं नेष्टयस्वरुक्माय नमः ॥ उं नववाहनाय नारुसाधियतय नमः ॥ उं
 वनूनाय पाणरुक्माय मकरासनाय जलाधियतय नमः ॥ उं वायवश्चक्ररुक्माय मृगवाहनाय पवनाधियत
 य नमः ॥ उं कुवनाय गदा रुक्माय अश्ववाहनाय यक्राधियतय नमः ॥ उं ज्ञानाय विष्णु रुक्माय वृषास
 नाय सर्वरुक्माधियतय नमः ॥ उं विष्णुवक्ररुक्माय कूर्मासनाय पातालाधियतय नमः ॥ उं वक्राङ्गिरुक्माय
 रुक्माय हंसवाहनाय स्वर्गाधियतय नमः ॥ उं स्वर्गाधियतय नमः ॥ उं मरुताय नमः ॥ उं पातालाय नमः ॥ उं मरुताय
 मरुदवानामूर्ध्वमुखाय लाहिनि वल्ग्वयश्वरुक्माय रुद्रवाहनाय साराय त्रीसमन्विताय नमः ॥

दंसमिधदाम् ॥ स्वाहा ॥ उं कुरु खिना ॥ उं उषाददवयुमि सूनसर्वाष्टयर्वाहजान ॥ उं उगर्क अक ॥ उं उवजान ॥ उं उनिष्ठा
 मान ॥ पुण्यकजनानी निष्ठमि सर्वतामूर्ध्व ॥ अग्निर्समूर्ध्वी कर्वा ॥ ॥ नृकार्थजातवालस्य वक्राङ्गी कुण्डलिनी क
 लुसाचाकनविष्णु पत्नी तस्मै सदा नमः ॥ ॥ वक्रासर्ग पत्नी तासर्ग ॥ उं वक्राङ्गी नमः ॥ उं पत्नी नाय नमः ॥
 मासर्ग नमः ॥ उं आत्मासनाय नमः ॥ उं निचलासर्ग ॥ पत्नी तया पुतर्प्यदी ॥ उं अं अम्नाय रुद्र ॥ उं दवस्य स्वास
 अत्युत्तरी ॥ उं ऊं ऊं ऊं ॥ उं पुण्य ॥ उं रुद्र ॥ पुण्य ॥ अना तथा निष्ठ ॥ उं रुद्रा निष्ठ ॥ अना तथा ॥ उं मा ॥ उं नृकार्थ
 ॥ उं अं अं अं ॥ उं अं अं अं ॥ उं अं अं अं ॥ उं अं अं अं ॥ उं अं अं अं ॥ उं अं अं अं ॥ उं अं अं अं ॥
 दक्षिणतमरुवलयचक्रस ॥ यावदग्निरवत प्रायसतस्य राजयत हनर्गगी विवमातन ॥ तस्मा अर्वागमा मदाय स्वा
 रुयाय किन्वथ आयाजनयथाय नमः ॥ आकाशवा निष्ठा पत्नी तयूवदी ॥ ततः पूजनं चन्दनसिन्दूरयक्षापवीतपू
 ष्यसाहिस्तन ॥ ॥ वक्रा पूजनं ॥ उं वक्राङ्गी नमः ॥ उं पुजाय नमः ॥ उं सर्वथा दवस्था नमः ॥ उं वक्राय नमः ॥

पुनीतयूजनं ॥ नैपुनीनायनमः ॥ नैअस्मानमः ॥ नैअपीयतयनमः ॥ उं वनूनायनमः ॥ उं जीलियदावि
 वकुम ॥ वक्रादकिगदिगिह्वाय ॥ उं आवुक्कनवाक्कावक्रमा ॥ ॥ पुनीतमूकनदिगिह्वाय ॥ हदा ॥ नैक्क
 दयायक्कनमः ॥ उं वंदविक्कर्विव ॥ पूर्ववत्पूजनं ॥ नैवक्कलनमः ॥ नैपुजायतयनमः ॥ नैसर्वथादवत्थानमः
 ॥ उं वक्कयक्कनं ॥ ॥ नैपुनीनायनमः ॥ नैअस्मानमः ॥ नैअपीयतयनमः ॥ उं वनूनायनमः ॥ उं जीलिय
 दाविवकुम ॥ ॥ नैक्कदयायक्कनमः ॥ अग्निर्हमूखीकवदी ॥ तिलनवालुगयी ॥ २ ॥ अग्निपूजनं ॥ उं नमामु
 नीलग्रीवायसरुसाकायमीदृष ॥ अथाथअस्यसत्त्वानाहकंथाकवैनमः ॥ ॥ तिलकुंगनयविसुवदीकुलु
 स्यवउर्विदिक्क ॥ उं कयानसिद्धि ॥ ४ ॥ ॥ तगायथायथाविधिभक्तुलकलगावर्चनंउपक्काणं ॥ ॥ तगा
 थपदागाधनंक्कगुविधानन ॥ दकितापूषराजनकमकुलुपविक्कदनानि जीलियविगलि ॥ पाकलीपा
 अक्कलीवक्कलीसीमार्जनक्कासमिधगुवअक्किलनकुलयवदशयूर्कपाउउरूपनमूगलसूर्यदृष

इयलक्काज्जिगवनावा ॥ पाकली ॥ नैअंअम्मायरुट् ॥ उं दवस्यत्वा ॥ नैजोको ॥ अलमूनी ॥ ॥ उं यागयागत
 वक्कवैवाजवाजहवामह ॥ सखायं सुमूर्तय ॥ विष्णुअलमूनीस्यगत् ॥ ॥ नैअंअम्मायरुट् ॥ उं पविक्क
 वैक्कथोसविक्कवैपसवउत्पूनाम्यक्किडणपविक्कलसूर्यस्यवग्निमिहि ॥ पविक्कदनी ॥ ॥ नैक्कदयाय
 क्कनमः ॥ उं विष्णुवनाटमसि ॥ पविक्कवन्धनमर्घपातुनिक्षय ॥ ॥ पाकलीपतर्पणी ॥ नैअंअम्मायरुट् ॥ उं
 दवस्यत्वास ॥ क्कागनायूरुदी ॥ नैजोको ॥ उं पुत्तूरुवक्क ॥ नैअलमूनायनमः ॥ क्कागमूलनपाकलीमूल
 स्यगत् ॥ ॥ नैविद्यानत्वायश ॥ क्कागमूलनपाकलीमूलस्यगत् ॥ ॥ नैजिवनत्वायनमः ॥ पाकली
 क्कागमूल ॥ मूलमूनायकैकमा ॥ ॥ नैअंअम्मायरुट् ॥ उं आयादिष्टामथाहु ॥ आकाशदकन
 पूनदी ॥ नैजोको ॥ चालाउनी ॥ ॥ उं दवीनायाअग्गुवाअग्गुवाअग्गुंममयंयऊंनयना
 एयययनि ॥ सुक्काउंययनिदवयूवी ॥ उथाक्कावदी ॥ ॥ उं यूर्मां ॥ उं वदीनवृक्कयूयमि

नमः वृणीष्वं वृजुः कृष्णायिकिनाल्ल॥ अवा नव नयं ॥ ॥ उं अग्नयत्वा कर्षया अमिग्नग्नीधामा स्याति
 त्वा कर्षया अमि॥ या कृत्वा दकं नाग्निमसू कर्षी ॥ ॥ उं देवाय कर्मदा तु मध्वं द वयस्यै यदा तु द्वा
 ष्यनाजघ्नुनि दम्वत्तु च्छामि॥ सर्ववस्तु सिंचनी ॥ ॥ अर्चयन् अग्निसुदीनया मरिच्य निधाय ॥ ॥ नमः
 अस्माली च नूत्नाली दं स गय्यदी ॥ उं अं अस्माय रुद्र ॥ उं दं वस्यत्वा स ॥ कृत्वा नात्सू कर्षी ॥ ॥ उं ऊं ऊं ऊं
 ॥ उं त्वनिखायै त्वदीयत् ॥ उं यत्सू व नक्र ॥ नमः दयं य गय्यदी ॥ ॥ उं अं अस्माय रुद्र ॥ उं अनिसिना
 सिसुयत्त कि द्वा जिने त्वा वाजं अयै सं मार्जि मि ॥ कृत्वा न सं मार्जनी ॥ ॥ स्वर्का वृक्ष मयी अत्वा राव
 न ॥ उं मदी नां य यासि व द्वा अमि व द्वा म ददि ॥ वृत्तु स्यासि क नीन कं ध्रु द्वा अमि व द्वा म ददि ॥ अ
 यत्तु ल्या मा र्जु निधाय ॥ ॥ नमः अत्र विष्णवे ॥ उं गमस्य वधू न व नक्रा वधू ना अना न यादित्या त्वगसि
 युनित्वा दिति वं तु ॥ कृत्वा जिने मा दाय ॥ उं अदि न सिवान स्य त्या अवा सियुधू वधू ॥ युनित्वा दित्या त्वगव

ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
विष्णवे नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गयश॥ उं कमदग्नयश॥ उं वसिष्ठायश॥ उं काश्यायश॥ उं अरुयश॥ उं वस्त्रादश॥ उं विष्णुवश॥ उं म
दंष्ट्रायश॥ उं यजानं नत्वा॥ उं सुहृदयाय सुश॥ अग्नि कोटा॥ आ सुक्ताली च नूक्ताली अग्नि कूलु
अधितयनं॥ उं ॐ धत्वा ऊं त्वा॥ ॥ यूनशविष्णु मयी आत्वा घृत मीलन रमचनं॥ उं अग्नि न संस्रुत्वा
रा॥ कृत्वा गेह घृतं कृतं न॥ उं विष्णु व ००॥ उं नूदाय ००॥ उं अनन्ताय स्वाहा॥ घृत मरुत्वा कृत्वा दग्धन
वशानि कनदी॥ उं सुहृदयाय सुनमः॥ उं अयदना असूत्रा ०॥ सि व दि ष द ०॥ थ नू या नि यु नि म ०॥ अ मा
ना असूत्रां स न ०॥ स्व ध मा च न नि य त्रा य न नि य त्रा थ न न्या मि षा ला का य दू दा त्वा स्मा क्षा मि ०॥ न
कार्थ यून न न्ना न आ मि षा॥ उं ॐ अ सु य रु ०॥ अ न न दि य न॥ उं न म्वा द स्मि मृ नि रि द व सा म न्दा नः
म न्ध स ०॥ अ हि व ध व स नि न र व न ०॥ न्दी गी दि कृ वा स चा॥ उं ल्व नि खा ये ल्व वी ष ट्॥ अ व द वी ष ट्
दी॥ उं द व स्य त्वा॥ अ व द वी अ सु क दी॥ उं कृ ता न मि न्दु ०॥ अ व द वी यु न र्थ दी॥ उं ल्व नि खा ये ल्व वी ष ट्॥

१०

उं ॐ धत्वा ऊं त्वा॥ अ व द वी अ व लो ठ नं द वि ता च नू मा ला ठ नं॥ ॥ उं ज स्वा हा॥ कृ त य ग्म स दि नं न द स्मा
त्प द ना अग्नि म त्य क दी॥ उं स वि रु त्वा यु स व उ त्पू ना म्बु च्छि दं द य वि रु त्वा सू य स्य न मि रि ०॥ अग्नि म त्य
क दी॥ उं स वि रु द्ध य स व उ त्पू ना म्बु च्छि दं द य वि रु त्वा सू य स्य न मि रि ०॥ आ त्मा त्प क दी॥ ॥ उं ॐ अ सु
य रु ०॥ ३॥ जि वा न मू त्रा य सि ष्ठा॥ घृ ता व ला क नी॥ मू ल न॥ उं नं जा सि शु क म सि॥ ॥ यूर्ध्व व नू या कृ दी
वा ला ठ नं॥ उं ॐ अ सु य रु ०॥ उं य वि रु त्वा वे षू॥ उं सु हृ द या य सु न मः॥ उं आ या दि षा॥ उं ल्व नि खा ये ल्व
वी ष ट्॥ उं द वी ना या अ र ०॥ उं ॐ अ सु य रु ०॥ उं य य्मा ०॥ उं ॐ अ सु य रु ०॥ उं अ ग्न य त्वा कृ ष्ठा
आ मि अ ग्नी धा मा र्था कृ ष्ठा आ मि॥ या कृ ष्ठा द कं ना मि या कृ दी॥ ॥ उं कृ ष्ठा स्या र व न धार ग्न य त्वा कृ ष्ठा
या आ मि व दि त्र सि ष्ठा स्या त्वा कृ ष्ठा आ मि॥ स व य कृ दी॥ उं या द द व ०॥ यु नि सून स व ०॥ यूर्ध्व दि जा न ०॥ स उ
ग र्क ०॥ स न व जा न ०॥ स ज नि कृ मा ०॥ ०॥ य र्थ ज ना नी नि षु नि स र्व ना मूर्ख॥ अग्नि कूलु वि ष द कि दी कृ त्वा॥ ॥

यमकुलमिली ३॥ उं अन्नयनं ना अन्नयाननाय ००॥ ॥ हृदा ॥ उं डूयदादि ॥ अचमनी ॥ ॥ हृदा ॥ कर्तु
 रुदाय ००॥ उं रुडकलुहि ॥ ॥ हृदा मिली ३॥ चूजकलुय ००॥ उं मूहनिदिवा अचमिंयुधिवावे
 न्ननत्रमृन अजानममिं कवि ० संसाजमनिथिजनानामासनायार्जुनयनदवा ४ स्वादा ॥ ॥ हृ
 दयना ॥ वृनवन्धनाय ००॥ उं वृनं कृन् वृनं कृन् कर्माग्निं वृन्माग्निं यज्ञावनस्यति श्रुक्लिय ४ दववीय
 मनामरुसूमृतीकामहिषयवर्वाक्षयक्रिवाहस ० सूनीर्धना असहसं स्वादा ॥ ॥ हृदयन ३॥ मः
 यजीयदानाय ००॥ उं वृनं नदीकामा प्रातिदी कया प्रातिदक्रिमा ॥ दक्रिमा ॥ वृद्धामा प्राति वृद्धया सः
 लमायुनं ००॥ ॥ हृदयन ३॥ मखलामा चनाय ००॥ उं उडूहर्मवन्नायागमस्यदवा ४ वविमध
 म ० सुधय ॥ अथवयमादित्यवृनं नवानागराम अदिनयस्याम ४ ००॥ ॥ हृदा ३॥ समावरुनायः
 ००॥ उं अहृयू ॥ ॥ हृदयन ३॥ विवाहाय ००॥ उं अग्नेयलीत्रिहा वरुदवानामृगनीनूर्य ॥ लवृ

न ० सामयीनय ००॥ ॥ हृदा ३॥ मानायिकुविसर्जनाय ००॥ उं मानवयूर्जुयुधिवीयूनीधमग्नि ०
 स्वयानावरानूया ॥ गीविस्वद्वैर्जुहुरि ४ संविदान ४ युजायनि विन्विकमा विमृ ४ रु स्वादा ॥ ॥
 हृदा ३॥ सीमूखीकवन्धय ००॥ उं उषाहदव ४ यु ॥ ॥ हृदयमकुल ३॥ रुमदाया गाय ००॥ उं विन्वः
 नक्षत्रूना विन्वना ॥ ॥ मिली कर्मा ३॥ उं हृदयाय कृन्म ४ उं युनिष्ठाये स्वादा ॥ उं मना कृनि ॥
 ॥ ॥ मूलन वीषउकन मकुल यूलू ॥ ॥ ननासिना कृन् दय ४ ॥ ॥ उं असिना कृन् ववाय स्वादा
 ॥ नून् ॥ चलु ॥ काधा ॥ उन्मरु ॥ कयाली ॥ रीषदा ॥ सीदाना ॥ ॥ नन ४ युयागमदिता ॥ उं युयागमदा कृन्
 वृकृसदिनाय स्वादा ॥ उं वनूगमदा कृन् स्ववृकृसदिनाय ००॥ उं कालायूनीमदा कृन् स्ववृकृसदिनाय
 ००॥ उं अहृदासमदा कृन् स्ववृकृसदिनाय ००॥ उं जयनीमदा कृन् स्ववृकृसदिनाय स्वादा ॥ उं चत्रिज
 मदा कृन् स्ववृकृसदिनाय ००॥ उं उकासकमदा कृन् स्ववृकृसदिनाय ००॥ उं दवीकाटमदा कृन् स्व

विमिश्रित

वृकसदिनाय ००॥ ॥ वृक्षादि ॥ अथ दिक् ॥ उं वृक्षाय ००॥ ८॥ ॐ ह्यादि आवत्रतदवनाथा
रूत्वा ॥ म॥ मूलनस्वादा ॥ उं जह ले स्वादा ॥ उं जस ले स्वादा ॥ ॥ नमो जिह्वादा म॥ उं वायुदाय
००॥ उं वायुदाय ००॥ उं मृत्पुदाय ००॥ उं मृत्पुकाय ००॥ उं वृक्षादाय ००॥ उं उच्चाटय ००॥ उं
अर्थदाय ००॥ उं मृत्पुकाय ००॥ ॥ म॥ ॥ उं सर्वसिद्धिदाय ००॥ उं जह ले स्वादा ॥ उं जस ले स्वा
दा ॥ ॥ नमो रग्नह्वनि ॥ उं नीलात्यलदलारासं कूजाग्निरेव वात्मकी धर्माथ काममाकात्म मरी
यूरुलदायकं ॥ कूजाग्निपूर्य समर्थयामि ००॥ अथ गन्धादि ॥ ॥ उं वचकाय ००॥ उं यून
काय ००॥ उं कूरुकाय ००॥ उं कूजाग्नय स्वादा ॥ यमं न ॥ ॥ यून ॥ सुवाग्ययल्लवनिष्पयावा
मरुत्तनजिर्षीयकूत्तनवृक्षादस्युत्तन ॥ उं मनूयुजाय नय ००॥ ॐ दं मनूयुजाय नय त्याग ॥ ग
गच्छ यल्लव ॥ न वायुं न उयस्य नर्त ॥ अर्थया उं दकिं कनिष्ठां गुलियुक्रिय ॥ त्यागसदिनं न स

वृजनेधेवकर्तुं ॥ ॐ नमोऽस्त्यवधूत ० नरुवधूना अत्राग्न्यादित्यास्त्वगसि युनित्वादिनिर्वृ
 दु। धिषत्सिया वृतीत्वादित्यास्त्वग्वदिवत्सुमनित्रसि धिषत्सिया वृतेयी युनित्वाया वृतीवृत्तु
 ॥ विसर्वाय कृत्वा न वक्रिजिवा न मूद्वि ॥ ॐ अग्ने वृजि जिह्वा जंत्वा सत्रिष्टुर्न वाजजित ० सम्मायि
 ॥ उययमनमूलनात्मयुजनं ॥ ॐ ॐ नुस्यवकासिवाजसात्वयार्थवाज ० संनवाजस्य नूयसर्व
 मानवं महीमदिनिनामवचसाकनामद। यस्यामिदं विश्वं भुवनमाविषं न स्यान्नादवसविना
 धर्मसाविषन् ॥ वामदक्षवयूथन् ॥ नस्मिन् यूजथन् ॥ ॐ ॐ न्याय २ ॥ ॐ वज्रदक्ताय २ ॥ ॐ सूत्राधिय
 नथ २ ॥ ॐ ज्ञानात्रमितुमवितात्र ॥ ॥ ननः युजायनिदवतामानसं चिन्ता ॥ वस्त्रायनीनवदलाकया
 लावर्तनं ॥ यूनरुमिषुदवावर्तनं ॥ कृष्णायनीनवदलाकया ॥ ॐ वस्त्रायनीनवदलाकया ॥ ॐ यनीनाय २ ॥
 ॐ अग्न्याय २ ॥ ॐ यरुवदाय २ ॥ ॐ सामवदाय २ ॥ ॐ अधवदाय २ ॥ ॐ ॐ न्याय २ ॥ ॐ अग्नेय २ ॥

२ श्री सिद्धि

[illegible]

۷۸

४सकजिह्वा४सकज्जय४सकक्षमयियातिसकहाजा४सकआत्वायज्जिसकयानिनायुलस्वद्युनन
स्वाहा॥जकजिह्वास्वायनी॥ ॥नर४यंचगश्रुदाम॥ॐस्त्रयश्चिमवक्राय००॥ॐस्त्रुउरुवक्राय००॥
ॐस्त्रुदक्षिणवक्राय००॥ॐस्त्रुपूर्ववक्राय००॥ॐस्त्रुउर्ध्ववक्राय००॥ॐस्त्रुयत्रायवक्रायस्वाहा॥ॐ
निर्यंचगश्रुदाम॥ ॥नमोवन्दानि॥स्वागंभूगस्तुयस्त्रुवन्दस्वा॥ॐस्त्रुग्वदायस्वाहा॥ॐदमृग्व
दाय॥ॐस्त्रुयिथी००॥ॐद॥ॐस्त्रुग्नथ००॥ॐद॥ॐस्त्रुयोनवद्वय००॥ॐद॥ॐस्त्रुस्त्रुल००॥ॐद॥ॐस्त्रु
माय००॥ॐद॥ॐस्त्रुजायनथ००॥ॐद॥ॐस्त्रुन्दाय००॥ॐद॥ॐस्त्रुलक्ष्मीय००॥ॐद॥ॐस्त्रुवागीश्व
रीय००॥ॐद॥ॐस्त्रुदवय००॥ॐद॥ॐस्त्रुयिथी००॥ॐदमृयिथी००॥ॐस्त्रुद्विथी००॥ॐद॥ॐस्त्रुम
क्षय००॥ॐद॥ॐस्त्रुयुक्ताय००॥ॐद॥ॐस्त्रुक्षत्राय००॥ॐद॥ॐस्त्रुसदस्यनथ००॥ॐद॥ॐस्त्रुअनूमनथ
००॥ॐदम॥१॥ ॥नथेवसर्वजस्वागंभूगस्तुयस्त्रुवन्द॥ॐस्त्रुयकुर्वदायस्वाहा॥ॐद॥ॐस्त्रुअनूत्रिकाय

30

१ श्री सिद्धि

स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ उं वायव्य ०० ॥ ॐ दं ॥ उं (ग्वतवल्क्य) स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ उं गुह्य ०० ॥ ॐ दं ॥ उं मध्य ०० ॥ ॐ
दं ॥ उं पुष्पाय स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ उं क्षत्राय ०० ॥ ॐ दं ॥ उं सदस्य ०० ॥ ॐ दं ॥ उं अनुमन ०० ॥ ॐ
दं ॥ स्वाग ४ ॥ २ ॥ ॥ उं साम वैदाय ०० ॥ ॐ दं ॥ उं सूर्याय ०० ॥ ॐ दं ॥ उं दिवे स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ उं वक्रव
ल्क्य ०० ॥ ॐ दं ॥ उं गुह्य ०० ॥ ॐ दं ॥ उं मध्य ०० ॥ ॐ दं ॥ उं पुष्पाय ०० ॥ ॐ दं ॥ उं क्षत्राय ००
॥ ॐ दं ॥ उं सदस्य ०० ॥ ॐ दं ॥ उं अनुमन ०० ॥ ॐ दं ॥ स्वाग ४ ॥ ३ ॥ ॥ उं अथर्व वैदाय ००
॥ ॐ दं ॥ उं दिग्व्य ०० ॥ ॐ दं ॥ उं वज्रमस ०० ॥ ॐ दं ॥ उं कृष्णवल्क्य ०० ॥ ॐ दं ॥ उं गुह्य ०० ॥ ॐ
दं ॥ उं मध्य ०० ॥ ॐ दं ॥ उं पुष्पाय ०० ॥ ॐ दं ॥ उं क्षत्राय ०० ॥ ॐ दं ॥ उं सदस्य ०० ॥ ॐ दं
॥ उं अनुमन ०० ॥ ॐ दं ॥ अनुमनय स्वाग ४ ॥ ४ ॥ ॐ दिवे दानि ॥ ॥ उं वज्रमस ०० ॥ उं नूदाय ०० ॥ उं
विष्णवे ०० ॥ उं ॐ नानाय ०० ॥ स्वाग ४ ॥ ॥ न नमि यं वा दानि ॥ उं रुद्र ०० ॥ उं रुद्र ०० ॥ उं रुद्र ०० ॥ उं रुद्र ०० ॥

۷۱

[illegible][illegible]

30

११

३१

आ१

ॐ नैरुपमानन्दवयमाङ्गुलास्वरा ॥ नैरुपमानन्दवयमाङ्गुलास्वरा ॥

२ श्री सिद्धि

۱۱